G.P. – Psychology
B.A. I (H) - Paper - I
PAGE NO.: 01
DATE:

Interview method

मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं को अध्ययन करने के लिए कई तरह की विधियों को अपनाया जाता है, जिसमें अन्तर्निरीक्षण एक प्रमुख विधि है। अन्तर्निरीक्षण का अर्थ होता है अन्तस् का निरीक्षण। अर्थात् जब कोई व्यक्ति अपने भीतर की अनुभूतियों को स्वंय निरीक्षण करता है तो इसे अन्तर्निरीक्षण कहा जाता है।

अन्तर्निरीक्षण विधि का प्रतिपादन वुण्ट एवं टिचेनर द्वारा किया गया, जिन्होंने संरचनावाद स्कूल की स्थापना की थी। इन लोगों ने मनोविज्ञान को चेतन अनुभूति का विज्ञान कहकर परिभाषित किया था और बतलाया था कि चेतन अनुभूति का अध्ययन करने का विधि सिर्फ अन्तर्निरीक्षण ही है। इन लोगों ने चेतन अनुभूति के तीन तत्व बतलाए हैं — संवेदन, भाव तथा प्रतिमा। यदि कोई व्यक्ति अपने चेतन अनुभूति का वर्णन इन तत्वों के रूप में करता है तो इस तरह का वर्णन अन्तर्निरीक्षण कहलाएगा। जैसे कोई व्यक्ति एक मृत युवक को सड़क पर पड़ा देखकर कहता है — 'मृत युवक के शरीर को देखकर उसे बहुत ही दुःख हुआ और ठीक इस तरह की घटना कल मेरे घर के सामने घटी थी जिसमें इसी उम्र के एक व्यक्ति को किसी ने जान से मार कर फेंक दिया था।'

यह वर्णन अन्तर्निरीक्षण का एक अच्छा उदाहरण है। इस चेतन अनुभूति में संवेदन, भाव तथा प्रतिमा तीनों तत्वों का समावेश है। अन्तर्निरीक्षण आत्मनिरीक्षण से भिन्न है। जैसे किसी व्यक्ति का यह कहना कि उसके अधिकतर बाल सफेद हो गये हैं, आत्मनिरीक्षण का उदाहरण है।

टिचेनर के अनुसार अन्तर्निरीक्षण विधि की

सफलता निम्न बातों पर निर्भर करती है :-

(1) अन्तर्निरीक्षण करनेवाले व्यक्ति में किसी प्रकार का पूर्वाग्रह तथा पक्षपात की भावना न हो।

(2) अन्तर्निरीक्षण करनेवाले व्यक्ति के ध्यान की प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण हो।

(3) अन्तर्निरीक्षण करनेवाला व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से तरोताजा हो।

(4) अन्तर्निरीक्षण करनेवाले व्यक्ति में अभिरुचि हो तथा उसकी चित्त प्रकृति शांत हो।

Demerits :- अन्तर्निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की सबसे पहली तथा पुरानी विधि है। इसके द्वारा व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण ठीक ढंग से हो पाता है। फिर भी इस विधि के कई दोष हैं, जैसे-

(1) यह विधि व्यक्तिगत तथा आत्मनिष्ठ होता है।

(2) व्यक्ति जब अपने चेतन अनुभूतियों का अन्तर्निरीक्षण करना शुरु करता है तो ऐसा देखा जाता है कि धीरे-धीरे अनुभूतियाँ अपने आप ही परिवर्तित होना शुरु हो जाती है। फलतः उनका अन्तर्निरीक्षण ठीक ढंग से नहीं हो पाता है।

(3) कुछ अनुभूतियाँ स्वभाव से ऐसी होती हैं जिनका अध्ययन अन्तर्निरीक्षण विधि द्वारा करना सम्भव नहीं होता है।

(4) अन्तर्निरीक्षण विधि का प्रयोग पशु-पक्षियों, बच्चों एवं पागलों पर नहीं हो पाता है।

(5) हर परिस्थिति में इस विधि का प्रयोग सम्भव नहीं है।

(6) इसमें एक ही व्यक्ति को दोहरा कार्य - अनुभव एवं निरीक्षण करना पड़ता है।

इन्हीं दोषों के कारण इस विधि का उपयोग प्रयोगात्मक विधि के पूरक के रूप में किया जाता है।